आपके पत्र

विज्ञान प्रगति : ज्ञान गंगा

विज्ञान प्रगति के अक्तूबर 2016 अंक का लेख 'कितना सुरक्षित है आपका भोजन' जनमानस के लिए बहुत उपयोगी और अनुकरणीय लगा। विज्ञान प्रगति का प्रत्येक अंक जीव तथा जीवन के बीच आने वाले सभी पॉजीटिव-निगेटिव बिन्दुओं पर अपनी पैनी नजर जमाये रखता है। वर्तमान में मानव स्वास्थ्य को हानि पहुंचाने वाले तत्व तेजी से बढ़ रहे हैं। इसी का परिणाम है कि परम्परागत भोजन से हटकर स्वादिष्ट एवं डिब्बा बन्द भोजन ने भी अपनी पैठ जन सामान्य तक बनाई है। विज्ञान प्रगति इस दिशा में मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन करती है। मैं इसके सम्पादक मण्डल को बधाई देता हूँ।

श्री राघवेन्द्र शुक्ल, सुपुत्र श्री चन्द्र प्रकाश शुक्ल
ग्राम-बक्सर, पो.-देवापार, जनपद-बस्ती 272 302 (उ.प्र.) **[मो. : 09670219191]**

मंगलकामना

विज्ञान प्रगति, इक गुलदस्ता, रंग-रंग के फूल सजाये।
गूढ़ रहस्य विज्ञान क्षेत्र के, सभी पाठकों तक पहुंचाये।।
रुचिकर लेख तथ्य सामग्री, बुद्धि ज्ञान को पुष्ट बनाती।
विज्ञान ज्ञान के प्यासे जन की, प्यास मिटा संतुष्ट बनाती।।
विशेषज्ञ, विषय वैज्ञानिक, सब आलेख परीक्षण करते।
शोधित करें, विषय सामग्री, ये उचित मार्गदर्शन करते।।
विज्ञान ज्ञान की वर्षा ऐसी, प्रतियोगी सब राहत पाते।
नित-नित नव तकनीकें पढ़ते, अपना बौद्धिक मान बढ़ाते।।
मेरी मनोकामना मन से, मन में मेरे यही विचार।
वर्षो रहे पल्लवित पुष्पित, विज्ञान प्रगति नित करे प्रसार।।

श्री चन्द्रप्रकाश पटसारिया, ग्राम व पोस्ट-इन्दरगढ़
जिला-दतिया 475 675 (म.प्र.)
[मो. : 09893678267]

पसंदीदा पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। अक्तूबर अंक का श्री भास्वर लोचन का लेख 'कितना सुरक्षित है आपका भोजन' पसंद आया। आज हमारी थाली में सबसे ज्यादा बीमारी ही परोसी जा रही हैं। चाहे वह बच्चों के लिए दूध हो या हमारे लिए भोजन, सभी दूषित हो चुके हैं।

मैं इस पत्रिका के माध्यम से किसान भाईयों से अनुरोध करना चाहूंगा कि वे फल, सब्जियों व अनाजों पर कम से कम कीटनाशकों व उर्वरकों का छिड़काव करें। अक्तूबर के अंक में प्रकाशित सुश्री नितिका सेठ का लेख 'डाइटेरी सप्लीमेंट्स' भी पसंद आया।

श्री चन्दन गुप्ता (संस्थापक व फिल्म निर्माता)
अलकन्डी इन्टरटेन्मेंट, मुम्बई
[मो. : 09431435856]

रुचिकर पत्रिका

गागर में सागर है, पत्रिका विज्ञान प्रगति!
मंगल शुभकामना है, करे यह चहमुंखी उन्नति!!
ज्ञान का सुव्यवस्थित रूप है विज्ञान!
अनमोल रत्न है जीवन में अच्छा ज्ञान!!
आविष्कार उपलब्धि सूचना का है भंडार!
कृतज्ञ हो जाते हम पाठक ऐसा अनमोल उपहार!!
प्रगति पथ पर अग्रसर होती रही विज्ञान प्रगति!
सार्थक जीवन वही होता जिसमें
होती है गति!!

श्री दिलीप भाटिया,
रावतभाटा 323 307 (राजस्थान)
[मो. : 09461591498;
ई-मेल : dileepkailash@gmail.com]

नवीनतम जानकारी

मैं विगत चार वर्षो से 'विज्ञान प्रगति' पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। मैं अपने मित्रों, परिजनों को विज्ञान प्रगति पढ़ने के लिए उत्साहित करता हूँ। विज्ञान प्रगति पत्रिका पढ़ने से मुझे बहुत से प्रश्नों की सटीक एवं विस्तृत जानकारियाँ मिलती हैं। इसमें प्रकाशित होने वाले सभी लेख इतने ज्ञानवर्धक होते हैं कि किसी एक की प्रशंसा अन्य के प्रति अन्याय होगा। मुझे इस पत्रिका में प्रकाशित आमुख कथा, दाना पानी और लोग, भविष्य में सवाल-जवाब पढ़कर महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं। इस अतुलनीय पत्रिका को एक अनमोल रत्न मानते हुए मैं विज्ञान प्रगति पत्रिका पढ़ने के लिए फिर से आग्रह करता हूँ कि सभी छात्र एवं छात्राएं इसे अवश्य पढ़ें।

श्री अभय कुमार मिश्र, सुपुत्र श्री सुरेन्द्र मिश्र
ग्राम-विश्वम्भरपुर, पो.-चनायन बाँध तहसील-मझौलियाँ, जिला-प. चम्पारण (बिहार)
[मो. : 08809579991;
ई-मेल : abhaymishrabth@gmail.com]

रोचक अंक

विज्ञान प्रगति का अक्तूबर 2016 का अंक प्राप्त हुआ। दलहन संकट और निवारण पर केन्द्रित यह अंक पठनीय एवं संग्रहणीय है। पत्रिका के सारे लेख एवं सामग्री बेहद महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित लगे। नफीस अंसारी जी की कहानी (विज्ञान गल्प) अच्छी लगी। श्री अनिल कुमार मिश्र और श्री दिनेश चमोला जी की विज्ञान कविताएं भी काफी अच्छी लगीं, परन्तु इन कविताओं में लालित्य की कमी अखरी। बरसाती अमरूदों की थैलाबंदी एक अच्छा लेख लगा। विज्ञान प्रगति दिन-प्रतिदिन और निखरती संवरती जा रही है। संपादकीय विभाग को बधाई। संपादकीय उम्दा है।

श्री सुरेश सौरभ प्राचार्य
श्री लक्ष्मण प्रसाद राज महाविद्यालय, अल्लीपुर, लखीमपुर-खीरी (उ.प्र.)
[मो. : 07376236066]

प्रकाशमयी पत्रिका

मैं पिछले 3-4 माह से विज्ञान पत्रिका का अध्ययन कर रहा हूँ। मुझे इसमें छपे हुए फोटो बहुत अच्छे लगते हैं। मुझे यह पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। जबसे मैंने इसे पढ़ना शुरू किया है तबसे मैंने टीवी पर कार्टून देखना कम कर दिया तथा टॉफी व चॉकलेट खाना कम कर दिया है। अब मैं अन्धविश्वास से प्रभावित नहीं होता। अपने माता-पिता को अवश्य अपने मन की बात बताया करूँगा। हाल में प्रकाशित अंक की आमुख कथा 'विज्ञान को मनोरंजक बनाते विज्ञान केंद्र' बहुत पसंद आयी। पिछले दिनों पोकेमॉन गेम्स से जीवन के लिए कितना खतरा है, यह भी जानकारी मिली। मेरे जैसे छोटे बच्चों के लिए विज्ञान प्रगति एक प्रकाशमयी पत्रिका है।

श्री आदित्य शर्मा, सुपुत्र श्री अमित शर्मा
ए 28, रामदत्त एन्क्लेव, उत्तम नगर
नई दिल्ली 110 059